१४२. करीब ही वेवकूफ लोग कहेंगे कि जिस क़िब्ला (जिस दिशा की तरफ मुंह करके नमाज पढ़ी जाती है) पर यह थे उस से इन्हें किस चीज ने फेर दिया? (आप) कह दीजिए कि पूरब और पश्चिम का मालिक अल्लाह (तआला) है वह जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखाता है।[1]

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (142)

१४३. और हम ने इसी तरह तुम्हें बीच की (संतुलित) उम्मत बनाया है।[2] ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ और रसूल (ﷺ) तुम पर गवाह हो जाएं और जिस क़िब्ले पर तुम पहले से थे, उसे हम ने सिर्फ इसलिए मुक़र्रर किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे ताबेदार कौन-कौन हैं और कौन है जो अपनी एड़ियों के वल पलट जाता है, जबकि यह काम कठिन है, लेकिन जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह (तआला) तुम्हारा ईमान वर्वाद नही करेगा, अल्लाह (तआला) लोगों के साथ प्यार और रहम करने वाला है।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ (143)

१४४. हम आप के मुंह को आसमान की तरफ, बार-बार उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आप को उस क़िब्ले की तरफ फेर देंगे, जिस से आप खुश हो जायें, आप अपना मुंह मस्जिद हराम (कअबा) की तरफ फेर लें और आप जहाँ कहीं भी हों आप अपना मुंह उसी ओर फेरा करें। अहले किताब को इस बात के अल्लाह की तरफ से सच होने का सच्चा इल्म है और अल्लाह तआला उन अमलों से गाफिल नहीं, जो ये करते हैं।

قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ (144)

---

[1] यह आयत क़िब्ला के वारे में नाजिल हुई।

[2] وسط का मतलब है, 'मध्य' (बीच), लेकिन यह बड़ाई और फजीलत के लिए भी इस्तेमाल होता है, यहाँ भी इसी मतलव में इस्तेमाल हुआ है।

The Ummah Technology Mission

१४५. और आप अगर अहले किताब को सभी सुबूत पेश कर दें, फिर भी वे आप के क़िब्ले का अनुकरण (पैरवी) नहीं करेंगे और न आप उन के क़िब्ले को मानने वाले, न ये आपस में एक-दूसरे के क़िब्ले को मानने वाले हैं। अगर आप इस के बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका फिर भी उनकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए पैरवी करने लगें तो बेशक आप भी जालिम हो जाएंगे।[1]

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ بِكُلِّ ءَايَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُم بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّٰلِمِينَ (145)

१४६. जिन्हें हमने किताब दी है वे तो इसे ऐसा पहचानते हैं, जैसे कोई अपने पुत्रों को पहचानता है, उनका एक गुट सच को पहचान कर फिर छुपाता है।

الَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (146)

१४७. आपके रब की तरफ से यह पूरा सच है, होशियार! आप शक करने वालों में से न हों।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ (147)

१४८. और हर इंसान एक न एक ओर आकृष्ट (मुतवज्जिह) हो रहा है, तुम नेकी की तरफ दौड़ो जहाँ कहीं भी तुम रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा, अल्लाह (तआला) को हर चीज की क़ुदरत है।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَٰتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (148)

१४९. और आप जहाँ से निकलें अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करें, यही सच है आप के रब की तरफ से और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से अल्लाह अन्जान नहीं।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ (149)

१५०. और जिस जगह से आप निकलें अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लें और जहाँ कहीं तुम रहो अपना मुँह उसी तरफ कर लिया करो, ताकि लोगों की कोई हुज्जत तुम पर बाक़ी न रह जाए, उनके सिवाय जिन्होंने उन में से ज़ुल्म किये हैं, तुम उन से मत डरो,[2] मुझ से ही डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ (150)

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह चेतावनी (तंबीह) पहले गुजर चुकी है, मक़सद उम्मत को होशियार करना है कि क़ुरआन और हदीस के इल्म के बावजूद अहले बिदअत के पीछे लगना ज़ुल्म और भटकाव है।

[2] जालिमों से न डरो, यानी मूर्तिपूजकों की बातों की फ़िक्र न करो।

दूँ और इसलिए भी कि तुम हिदायत पा सको।

१५१. जिस तरह हम ने तुम में तुम्ही में से रसूल (ईशदूत-मोहम्मद ﷺ) को भेजा, जो हमारी आयतें (पाक क़ुरआन) तुम्हारे सामने तिलावत करता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब और हिक्मत और उन बातों का जिन से तुम लाइल्म थे इल्म दे रहा है।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ (151)

१५२. इसलिए तुम मुझे याद करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा और मेरे शुक्रगुज़ार रहो और नाशुक्री से बचो।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ (152)

१५३. हे ईमानवालो! सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद चाहो, अल्लाह (तआला) सब्र करने वालों का साथ देता है।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ (153)

१५४. और अल्लाह (तआला) की राह में शहीद होने वालों को मुर्दा न कहो,[2] वे ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम नहीं समझते।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ (154)

१५५. और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान ज़रूर लेंगे, दुश्मन के डर से, भूख-प्यास से, माल व जान, फलों की कमी से और उन सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ (155)

१५६. उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह दिया करते हैं कि हम तो ख़ुद अल्लाह (तआला) के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (156)

The Ummah Technology Mission

---

[1] इंसान की दो ही हालतें होती हैं। सुख-सुविधा (ऐशो-आराम) या दुख और मुसीबत, सुख में अल्लाह का शुक्र करने पर ज़ोर और दुख में सब्र और अल्लाह से मदद लेने पर बल है।

[2] शहीदों को मरा हुआ न कहना उनके मान-सम्मान के लिए है। यह ज़िन्दगी बर्ज़ख (आलोक-परलोक के बीच का जीवन है) जिसे हमारी अक़्ल समझने में क़ासिर है। यह ज़िन्दगी सम्मान के अनुसार नबियों, ईमानवालों यहाँ तक कि काफ़िरों को भी हासिल है। शहीद की रूह और कुछ क़ौल के अनुसार ईमान वालों की रूहें भी एक चिड़िया की शक्ल में जन्नत में जहाँ चाहती है फिरती है। (इब्ने कसीर और सूरः आले-इमरान-१६९ देखें)

أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوَٰتٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٞۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ﴿157﴾

१५७. यही हैं जिन पर उन के रब की रहमत और नवाज़िशें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं।

إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِۖ فَمَنۡ حَجَّ ٱلۡبَيۡتَ أَوِ ٱعۡتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَاۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرٗا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿158﴾

१५८. बेशक सफ़ा (पहाड़) और मरवह (पहाड़) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से हैं,[1] इसलिए अल्लाह के घर का हज और उमरा करने वाले पर इनका तवाफ़ कर लेने में भी कोई हर्ज नहीं। अपनी ख़ुशी से भलाई करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है और उन्हें अच्छी तरह जानने वाला है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أُولَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ﴿159﴾

१५९. जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों और निर्देशों (हिदायत) को छुपाते हैं इस के बावजूद कि हम उसे अपनी किताब (पाक क़ुरआन) में लोगों के लिए बयान कर चुके हैं उन लोगों पर अल्लाह की और सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है।[2]

إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُواْ وَأَصۡلَحُواْ وَبَيَّنُواْ فَأُولَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيۡهِمۡ وَأَنَا ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿160﴾

१६०. लेकिन वह लोग जो तौबा कर लें और सुधार कर लें और बयान करें तो मैं उनकी तौबा क़बूल कर लेता हूँ, और मैं तौबा क़बूल करने वाला और रहम करने वाला हूँ।

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٌ أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ ﴿161﴾

१६१. बेशक जो काफ़िर कुफ़्र की हालत में मर जाएं उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सभी लोगों की लानत है।

خَٰلِدِينَ فِيهَاۖ لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنظَرُونَ ﴿162﴾

१६२. जिस में वे हमेशा रहेंगे न उन से अज़ाब हल्का किया जायेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।

The Ummah Technology Mission

---

[1] شَعَائِر बहुवचन (जमा) شَعِيرَة का है, जिसका मतलब निशानी के है, यहाँ हज के काम (जैसे अरफ़ात में रुकना, सअई करना, (सफ़ा-मरवह पहाड़ों के बीच मुक़र्रर रास्ते का चक्कर लगाना, कंकरियाँ मारना, क़ुर्बानी देना से) मुराद है जो अल्लाह तआला ने मुक़र्रर किया है।

[2] अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना इतना बड़ा गुनाह है कि अल्लाह की लानतों के सिवा दूसरे लानतें करने वालों के ज़रिये भी लानत की जाती है। हदीस में है (من سُئل عن علم فكتمه أُلجم يوم القيامة بلجام من النار)

وَاِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِيۡمُ (163)

१६३. और तुम सब का माबूद एक अल्लाह ही है उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, वह बहुत कृपालु और बड़ा दयालु है।

اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِىۡ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ (164)

१६४. बेशक आकाश और धरती का बनाना, रात दिन का फेर बदल, नावों का लोगों को फ़ायेदा देने वाली चीज़ों को लेकर समुद्र में चलना, आकाश से वर्षा उतार कर मुर्दा धरती को ज़िन्दा कर देना, इस में हर तरह के जीव को फैला देना, हवा की दिशा परिवर्तन (बदलना) करना, और बादल जो आकाश व धरती के बीच मुसख़्ख़र हैं, इस में अक़्लमंदो के लिए अल्लाह की क़ुदरत की निशानी हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَنۡدَادًا يُّحِبُّوۡنَهُمۡ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوۡ يَرَى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡٓا اِذۡ يَرَوۡنَ الۡعَذَابَ ۙ اَنَّ الۡقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيۡعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعَذَابِ (165)

१६५. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए और ईमानवाले अल्लाह से प्रेम में सख़्त होते हैं, काश कि मूर्तिपूजक जानते जबकि अल्लाह के अज़ाबों को देखकर (जान लेंगे) कि सभी ताक़त अल्लाह ही को है और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (तो कभी भी मूर्तिपूजा न करते)

اِذۡ تَبَرَّاَ الَّذِيۡنَ اتُّبِعُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا وَرَاَوُا الۡعَذَابَ وَتَقَطَّعَتۡ بِهِمُ الۡاَسۡبَابُ (166)

१६६. जिस समय मुखिया लोग अपने पैरोंकारों से अलग हो जायेंगे और अज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे और सभी रिश्ते टूट जायेंगे।

وَقَالَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا لَوۡ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنۡهُمۡ كَمَا تَبَرَّءُوۡا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيۡهِمُ اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ حَسَرٰتٍ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَمَا هُمۡ بِخٰرِجِيۡنَ مِنَ النَّارِ (167)

१६७. और ताबेदार कहने लगेंगे, काश हम दुनिया की तरफ़ दोबारा जायें तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जाएं, जैसे ये हम से हैं। इसी तरह अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल दिखाएगा उनको पछतावे के लिए, ये कभी भी जहन्नम से न निकल पाएंगे।[1]

[1] मुशरिक आख़िरत में धर्मगुरु और धर्माचारियों की मजबूरी और ख़्यानत पर अफ़सोस करेंगे, लेकिन इस अफ़सोस का कोई फ़ायेदा न होगा, काश दुनिया में ही शिर्क से तौबा कर लें।

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَٰلًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَٰتِ الشَّيْطَٰنِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (168)

१६८. हे लोगों ! धरती में जितनी भी हलाल और पाक चीज़ें हैं, उन्हें खाओ-पियो और शैतान के रास्ते पर न चलो,[1] वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (169)

१६९. वह तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और अल्लाह (तआला) पर उन बातों के कहने का हुक्म देता है जिनका तुम्हें इल्म नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَآ أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَآ ۗ أَوَلَوْ كَانَ ءَابَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَهْتَدُونَ (170)

१७०. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुज़ुर्गों (बाप-दादा) को पाया, जबकि उन के बुज़ुर्ग बेवक़ूफ़ और भटके हुए हों।[2]

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَآءً وَنِدَآءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ (171)

१७१. और काफ़िर उन जानवरों की तरह हैं जो अपने चरवाहे की सिर्फ़ पुकार और आवाज़ ही को सुनते हैं (समझते नहीं) वह बहरे गूंगे और अंधे हैं, उन्हें अक़्ल नही है।[3]

---

[1] यानी शैतान के तावेदार बनकर अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम न कहो, जिस तरह से मूर्तिपूजकों ने किया कि अपनी मूर्तियों के नाम से समर्पित (वक़्फ़) जानवरों को अपने लिए हराम कर लेते थे, जिसका तफ़सीली बयान सूरः अल-अन्आम में आयेगा।

[2] आज भी अहले बिदअत को समझाया जाए कि इन नई बातों की धर्म में कोई कीमत नहीं, तो वह यही जवाब देंगे कि ये रीति-रिवाज हमारे बुज़ुर्गों से चली आ रही है, जबकि बुज़ुर्ग भी दीन के इल्म से नावाकिफ़ और हिदायत से महरूम हो सकते हैं, इसलिए मज़हबी दलीलों के सुबूत के सामने बुज़ुर्गों के हुक्म को मानना, इमामों की पैरवी (बिना सुबूत के उनकी बात माने जाना) पूरी तरह से भटकाव है, अल्लाह तआला मुसलमानों को भटकाव के दलदल से निकाले।

[3] इन काफ़िरों की मिसाल, जिन्होंने अपने बुज़ुर्गों की पैरवी में अपनी अक़्ल और इल्म को छोड़ दिया है, उन जानवरों की तरह है, जिनको चरवाहा बुलाता और पुकारता है, तो वह जानवर आवाज़ तो सुनते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि उन्हें क्यों बुलाया और पुकारा जा रहा है? इसी तरह यह तावेदार भी बहरे है कि सच की आवाज़ नहीं सुनते, गूंगे है कि सच बात मुँह से नहीं निकालते, अंधे है कि सच देख नहीं सकते और अक़्ल से ख़ाली हैं कि सच की दावत और एकेश्वरवाद (तौहीद) और सुन्नत की दावत को समझने के लायक़ नहीं हैं, यहाँ दुआ से क़रीब की आवाज़ और निदाअ से दूर की आवाज़ मुराद है।

The Ummah Technology Mission

१७२. ऐ ईमानवालो! जो (पाक) चीज हम ने तुम्हें अता की हैं, उन्हें खाओ-पियो और अल्लाह (तआला) के शुक्रगुज़ार रहो, अगर तुम सिर्फ उसी की इबादत करते हो ।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَٱشْكُرُوا۟ لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿172﴾

१७३. तुम पर मुर्दा और ख़ून (बहा हुआ), सूअर का गोश्त और वह हर चीज जिस पर अल्लाह के नाम के सिवाय दूसरों के नाम पुकारे जायें हराम हैं, लेकिन जो मजबूर हो जाये और वह सीमा उल्लंघन करने वाला और ज़ालिम न हो, उसको उन को खाने में कोई गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला रहम करने वाला है ।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ ٱلْمَيْتَةَ وَٱلدَّمَ وَلَحْمَ ٱلْخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهِۦ لِغَيْرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنِ ٱضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿173﴾

१७४. बेशक जो लोग अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब छिपाते हैं, और उसे थोड़ी-थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं, यक़ीन करो वे अपने पेट में आग भर रहे हैं, क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन से बात भी नहीं करेगा, न उन्हें पाक करेगा, उन के लिए सख़्त अज़ाब हैं ।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَشْتَرُونَ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُو۟لَٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِى بُطُونِهِمْ إِلَّا ٱلنَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿174﴾

१७५. यही वह लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले और अज़ाब को मग़फ़िरत के बदले ख़रीद लिया है, यह लोग आग का अज़ाब कितना सहन करनें वाले हैं ।

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُا۟ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلْهُدَىٰ وَٱلْعَذَابَ بِٱلْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ أَصْبَرَهُمْ عَلَى ٱلنَّارِ ﴿175﴾

१७६. इन अज़ाबों की वजह यही है कि अल्लाह तआला ने सच्ची किताब उतारी और इस किताब में इख़्तिलाफ़ रखने वाले ज़रूर दूर के विभेद (ख़िलाफ़) में हैं ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ ۗ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ ٱخْتَلَفُوا۟ فِى ٱلْكِتَٰبِ لَفِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿176﴾

---

[1] इस में ईमानवालों को उन सभी चीज़ों के खाने का हुक्म है, जिन्हें अल्लाह ने हलाल की हैं और उस पर अल्लाह का शुक्रगुज़ार होने की बात कही गयी है, उस से तो एक बात यह मालूम हुई कि अल्लाह की हलाल की हुई चीज ही पाक और पाकीज़ा हैं, हराम की हुई चीज पाक नहीं चाहे वे मन को कितनी ही पसंद क्यों न हो (जैसे पश्चिमी देशों को सुअर का गोश्त बहुत ज़्यादा पसन्द है ।

The Ummah Technology Mission

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (177)

१७७. सारी अच्छाई पूरब और पश्चिम की तरफ मुँह करने में ही नहीं, बल्कि हक़ीक़त में अच्छा वह इंसान है जो अल्लाह (तआला) पर, क़यामत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और नबियों पर ईमान रखने वाला है, जो माल से प्रेम करने पर भी रिश्तेदारों, यतीमों, ग़रीबों, मुसाफ़िरों और भिखारियों को दे, क़ैदियों को आज़ाद करे, नमाज़ की पाबंदी और ज़कात को अदा करे, जब वादा करे तो उस को पूरा करे, माल की कमी, दुख-दर्द और लड़ाई के समय सब्र करे, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ (178)

१७८. हे ईमानवालो! तुम पर क़त्ल किये गये इंसान का बदला लेना फ़र्ज़ किया गया है, आज़ाद आज़ाद के बदले, ग़ुलाम ग़ुलाम के बदले, नारी नारी के बदले, हाँ अगर जिस किसी को उस के भाई की तरफ़ से माफ़ कर दिया जाये, उसे भलाई का सम्मान (एहतेराम) करना चाहिए और आसानी के साथ देयत (माल जो क़त्ल के बदले लिया जाये फ़िदिया) अदा करना चाहिए,[1] तुम्हारे रब की तरफ़ से यह छूट और रहमत है[2] उस के बाद भी जो उल्लघंन (तजावुज़) करे, उसे बहुत अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।[3]

The Ummah Technology Mission

---

[1] माफ़ी की दो हालतें हैं, एक तो बिना कोई माल बदले में लिए यानि देयत लिए बिना हो सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी का हक़दार बनने के लिए माफ़ करना, दूसरी हालत क़त्ल के बजाये देयत क़ुबूल कर लेना। अगर यह दूसरी हालत अपनायी जाये, तो कहा जा रहा है कि देयत लेने वाला भलाई का पालन करे। وأداء إليه بإحسان में क़ातिल से कहा जा रहा है कि बिना किसी कष्ट दिये अच्छी तरह से देयत को अदा करे, क़त्ल हुये इंसान के नज़दीकी रिश्तेदारों ने उस पर मेहरबानी की है उस के बदले में शुक्रिया ही के साथ दे। هل جزاء الإحسان إلا الإحسان (अर्रहमान)

[2] यह छूट और मेहरबानी (यानि बदला, माफ़ी या देयत तीनों हालतें) अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम पर हुई हैं, नहीं तो इससे पहले तौरात वालों के लिए बदला या माफ़ी थी, लेकिन देयत नहीं थी और इंजील वालों (इसाईयों) में केवल माफ़ी ही थी, बदला था न देयत। (इब्ने कसीर)

[3] दैयत, (माल जो मक़तूल के वारिसीन क़ातिल से क़त्ल के बदले में सज़ाये मौत माफ़ करने के लिए माँगे) क़ुबूल करने या ले लेने के बाद भी उसका क़त्ल कर दे, तो यह ज़ुल्म और ज़्यादती

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿179﴾

१७९. अक़्लमंदों! क़िसास (प्रतिहत्या, हत्यादण्ड) में तुम्हारे लिए जिंदगी है इस वजह से तुम (क़त्ल करने से) रुकोगे ।[1]

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۨ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿180﴾

१८०. तुम पर फ़र्ज कर दिया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और माल छोड़ जाता हो, तो अपने माँ-वाप और रिश्तेदारों के लिए अच्छाई के साथ वसीयत कर जाये ।[2] परहेजगारों पर यह फ़र्ज वाजेह है ।

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿181﴾

१८१. अब जो इंसान उसे सुनने के वाद बदल दे, तो उसका गुनाह वदलने वाले पर ही होगा, वेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और जानने वाला है ।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿182﴾

१८२. हाँ जो वसीयत करने वाले के पक्षपात और गुनाह से डरे और अगर वह उन में आपस में सुधार करा दे, तो उस पर गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला मेहरबान है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿183﴾

१८३. ऐ ईमानवालो! तुम पर रोज़े (व्रत जो रमजान के महीने में रखे जाते है) फ़र्ज किये गये, जिस तरह से तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज किये गये थे, ताकि तुम तक़्वा (अल्लाह से डर) का रास्ता अपनाओ ।[3]

The Ummah Technology Mission

है, जिसकी सज़ा उसको दुनिया और आख़िरत दोनों में भुगतना पड़ेगा ।

[1] जब क़ातिल को यह डर होगा कि क़त्ल के बदले में उसे भी मार डाला जायेगा, तो वह किसी को भी क़त्ल करने की हिम्मत नही करेगा और जिस समाज में क़त्ल के वदले में यह क़ानून लागू हो जाता है, वहाँ यह डर समाज को क़त्ल और ख़ून बहाने से महफ़ूज रखता है, जिस से समाज में वहुत सुख-शान्ति (अमनो-अमान) रहती है । इसका अवलोकन (मुशाहदा) सऊदी अरब के समाज में किया जा सकता है, जहाँ इस्लामी क़ानून के पालन के ही वजह से अल्लाह की नेमत से सुख-शान्ति का माहौल है ।

[2] वसीयत करने का यह हुक्म विरासत की आयत उतरने से पहले दिया गया था, अव यह मन्सूख़ है ।

[3] صيام-صوم (रोज़ा, व्रत) का मतलव है सुवह सूरज निकलने से पहले रात के अंधेरे के वाद जो

أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ (184)

१८४. गिनती में कुछ ही दिन हैं, लेकिन अगर तुम में से जो इंसान बीमार हो या सफर में हो, तो वह दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले और जो इसकी क़ुदरत रखता हो फ़िदिया में एक ग़रीब को खाना दे, फिर जो इंसान भलाई में बढ़ जाये वह उसी के लिए बेहतर है, लेकिन तुम्हारे हक़ में बेहतर अमल रोज़े (व्रत) रखना ही है अगर तुम जानते हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (185)

१८५. रमज़ान का महीना वह है, जिस में क़ुरआन उतारा गया।[1] जो लोगों के लिए हिदायत है, और जो हिदायत और हक़ व बातिल के दरम्यिान फ़ैसलाकुन है, तो तुम में जो भी इस महीने को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो या सफर में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिनती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह (तआला) की मर्ज़ी तुम्हारे साथ आसानी की है सख़्ती की नहीं, वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह (तआला) की अता की गई हिदायत के अनुसार उसकी बड़ाई बयान करो और उसके शुक्रगुज़ार रहो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ (186)

१८६. और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कह दें कि मैं बहुत ही क़रीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं क़ुबूल करता हूँ, इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें यही उनकी भलाई का कारण (बाईस) है।

सफेद रौशनी वातावरण में होती है, के वक़्त से लेकर सूरज के डूबने तक खाने-पीने बीवी से हमबिस्तरी करने से, अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए रुके रहना, यह इबादत नफ़्स की पाकी और सफ़ाई के लिए बहुत ज़रूरी है, इसलिए इसे तुम से पहले की उम्मतों पर भी फ़र्ज़ किया गया था।

[1] रमज़ान में क़ुरआन उतरने का मतलब यह नहीं कि पूरा क़ुरआन किसी एक रमज़ान में उतरा, बल्कि यह है कि रमज़ान की शबे क़द्र (एहतेराम वाली रात) में लौह महफ़ूज़ (अल्लाह की वह किताब जिस में शुरू से आख़िर तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आसमान में उतार दिया गया और वहाँ बैतुल इज़्ज़त (इज़्ज़त वाला घर) में रख दिया गया, वहाँ से हालात के एतबार से लगभग. २३ साल तक उतरता रहा। (इब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि क़ुरआन रमज़ान में या लैलतुल क़द्र या लैलतुल मुबारक में उतरा यह सब सच है।

The Ummah Technology Mission

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْـَٔانَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ (187)

१८७. रोज़े की रातों में अपनी वीवियों से मिलने की तुम्हें इजाज़त है, वह तुम्हारा लिवास हैं और तुम उन के लिबास हो, तुम्हारी छिपी खयानत का अल्लाह को इल्म है, उस ने तुम्हारी तौबा को क़ुबूल कर तुम्हें माफ कर दिया, अब तुम्हें उन से हमबिस्तरी की और अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज़ को ढूंढ़ने का हुक्म है, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक की फ़ज्र की सफेदी का धागा अंधेरे के काले धागे से वाज़ेह हो जाये,[1] फिर रात तक रोज़े को पूरा करो और बीवियों से उस समय हमबिस्तरी न करो जब कि तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ (एक मुक़र्ररा वक़्त के लिए अल्लाह की इबादत के मक़सद से अपने आप को मस्जिद तक ही महदूद कर लेना) में हो, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद हैं, तुम इन के क़रीब भी न जाओ, इसी तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ लोगों पर बयान करता है, ताकि वे बचें।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ (188)

१८८. और एक-दूसरे का माल ग़लत तरीक़े से ना खाया करो, न हक़दार इंसानों को रिश्वत पहुँचाकर किसी का कुछ माल जुल्म से हड़प कर लिया करो, अगरचे कि तुम जानते हो।[2]

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (189)

१८९. लोग आप से नये चाँद के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए कि यह लोगों (की इबादत) के वक़्त और हज के मौसम के लिए है (एहराम की हालत में) और घरों के पीछे से तुम्हारा आना कोई नेक काम नहीं, बल्कि नेक काम वह है जो अल्लाह से डरता हो। घरों में

---

[1] इस्लाम के शुरू में एक हुक्म यह था कि रोज़ा खोल लेने के बाद ईशा (रात) की नमाज़ या सोने तक खाने-पीने और पत्नी से हमबिस्तरी करने का हुक्म था, सोने के बाद इन में से कोई काम नहीं किया जा सकता था। वाज़ेह है यह मना करना कठिन था और इस के हिसाब से काम करना कठिन था, अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों पाबन्दी मन्सूख़ कर दी।

[2] यह ऐसे इंसान के बारे में है जिसके पास किसी का हक़ हो और मालिक के पास कोई सुबूत न हो, जिसका फ़ायेदा उठाकर वह इंसान अदालत या हक़दार से अपने हक़ में फ़ैसला करा ले, इस तरह दूसरे का हक़ ले ले, यह ज़ुल्म और हराम है, अदालत का फ़ैसला ज़ुल्म और हराम को जायेज़ नहीं कर सकता, यह ज़ालिम अल्लाह तआला के सामने मुजरिम होगा। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

उन के दरवाज़े से आया करो,[1] और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

१९०. और लड़ो अल्लाह की राह में उन से जो तुमसे लड़ते हैं और जुल्म न करो [2] अल्लाह (तआला) ज़ालिम को पसंद नहीं करता है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ (190)

१९१. और उन्हें मारो जहाँ भी पाओ और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है और (सुनो) फ़ित्ना (लड़ाई-झगड़ा, फ़साद) क़त्ल से ज़्यादा बुरा है[3] और मस्जिदे हराम के पास उन से लड़ाई न करो, जब तक कि वे ख़ुद तुम से न लड़ें, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम भी उन्हें मारो,[4] काफ़िरों का बदला यही है।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ (191)

१९२. अगर वे रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (192)

१९३. और उन से लड़ो, जब तक कि फ़ित्ना न मिट जाये और अल्लाह (तआला) का दीन रह जाये, अगर वह रुक जायें (तो तुम भी रुक जाओ) ज़ुल्म तो केवल ज़ालिमों पर हैं।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ (193)

---

[1] अन्सार जाहिलियत के दौर में जब हज्ज या उमरः का एहराम (हज और उमरः के लिए एक ख़ास हालत जिस में मर्द एक लुंगी और एक ओढ़ने की चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बाँधता है) बाँध लेते और फिर उसके बाद किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती, तो अपने घरो में मुख्य दरवाज़े से न दाख़िल होते, बल्कि पीछे की दीवार लाँघ कर दाख़िल होते, इसको वह सवाब समझते, अल्लाह तआला ने कहा कि यह सवाब नहीं है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] इस आयत में पहली बार उन लोगों से लड़ने का हुक्म दिया गया है, जो हमेशा मुसलमानों के क़त्ल करने के ख़्याल में रहते थे, फिर भी ज़्यादती से रोका गया है, जिसका मतलब यह है कि कुचलो नहीं, औरतों, बच्चों, बूढ़ों को जिनका जंग में योगदान न हो क़त्ल मत करो, पेड़ वग़ैरह को जला देना, जानवरों को बिला वजह मार डालना भी ज़्यादती है, इन से बचा जाये। (इब्ने कसीर)

[3] मज़हब इस्लाम के शुरूआती दौर में मक्का शहर में चूँकि मुसलमान कमज़ोर और बिखरे हुए थे, इसलिए काफ़िरों से लड़ना मना था, जब मुसलमान मक्का शहर से हिजरत करके मदीने आये तो मुसलमान की सारी ताक़त जमा हो गयी, फिर उनको जिहाद करने का हुक्म अता किया गया, शुरू में आप केवल उन्हीं से लड़ते जो मुसलमानों से लड़ते, लेकिन इस के बाद इसको और बढ़ाया गया और मुसलमानों ने ज़रूरत के ऐतबार से काफ़िरो के इलाक़े में भी जाकर जिहाद किया।

[4] हरम के हुदूद में लड़ना मना है, लेकिन अगर काफ़िर इसकी रिआयत न करें और तुम से लड़ें तो तुम्हें भी उन से लड़ने का हुक्म है।

The Ummah Technology Mission

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿194﴾

१९४. हुरमत वाले महीने के बदले हुरमत वाले महीनें हैं और हुरमतें अदले-बदले की हैं, जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम भी उस पर उसी तरह का ज़ुल्म करो जो तुम पर किया है और अल्लाह तआला से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों के साथ है।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿195﴾

१९५. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों कष्ट में न पड़ो। भलाई करो अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है।

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۪ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۭ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَھْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿196﴾

१९६. और हज व उमरे को अल्लाह तआला के लिए पूरा करो,[1] और अगर तुम रोक दिये जाओ, तो जो भी क़ुर्बानी का जानवर हो उसे क़ुर्बानी कर डालो।[2] और अपने सिर न मुंडवाओ जब तक कि क़ुर्बानी क़ुर्बानगाह तक न पहुंच जाये। और तुम में से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई दर्द हो जिसकी वजह से वह सिर मुंडवा ले तो उस पर फ़िदिया है कि चाहे तो रोज़ा रख ले, या चाहे तो सदक़ा दे, या क़ुर्बानी करे[3] लेकिन जैसे ही शान्ति की हालत हो जाये, तो जो उमरे से लेकर हज तक तमत्तुअ (लाभान्वित) करे, बस उसे जो भी क़ुर्बानी मौजूद हो उसे कर डाले। जिसमें ताक़त न हो वह तीन रोज़े तो हज के दिनों में रख ले और सात वापसी में यह पूरे दस हो गये।[4] यह हुक्म

---

[1] यानी हज्ज या उमरे का "एहराम" बांध लो, तो उसको पूरा करना ज़रूरी है, चाहे नफ़्ली हज्ज व उमर: ही हो। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] अगर रास्ते में दुश्मन या भयंकर बीमारी की वजह से रुकावट आ जाये, तो एक जानवर (हदी) बकरी, गाय या ऊंट जो भी हो, वहीं क़ुर्बानी देकर सिर मुंडा लो और एहराम खोल दो, जिस तरह नबी ﷺ और आप के सहाबा ने हुदैबिया की जगह पर क़ुर्बानियों की बलि दी थी, हुदैबिया का मुक़ाम "हरम" के हुदूद से बाहर है। (फ़तहुल क़दीर) और अगले साल उसकी क़ज़ा दो जैसे नबी ﷺ ने ६ हिजरी वाले उमरे की क़ज़ा (बदला) ७ हिजरी में दी।

[3] यानी (अर्थात) उसको कोई ऐसा रोग हो जाये कि उसको सिर मुंडवाना पड़ जाये, तो उसका फ़िदिया (प्रतिशोध) ज़रूरी है। हदीस के अनुसार ऐसे इंसान को चाहिए कि वह ६ भूखे लोगों को भोजन कराये या एक बकरी की बलि (क़ुर्बानी) दे या तीन रोज़े (व्रत) रखे।

[4] हज तीन तरह से किया जा सकता है, जिन के तीन नाम हैं, (१) इफ़राद – सिर्फ़ हज्ज के इरादे

The Ummah Technology Mission

उन के लिए है जो मस्जिदे हराम (मक्का) के रहने वाले न हों ।[1] (लोगों)! अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह (तआला) सख़्त सज़ायें देने वाला है ।

۱۹۷. हज के महीने मुक़र्रर हैं,[2] इसलिए जो इन में हज वाजिब करे वह अपनी बीवी से जिमाअ करने, गुनाह करने और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे, तुम जो सवाब का काम करोगे उसे अल्लाह (तआला) जानने वाला है, और अपने साथ रास्ता का ख़र्च ले लिया करो, सब से बेहतर रास्ता ख़र्च तो अल्लाह का डर है और ऐ अक़्लमंदों! मुझ से डरते रहा करो ।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿197﴾

१९८. तुम पर अपने रब का फ़ज़्ल ढूंढ़ने में कोई गुनाह नहीं ।[3] जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के क़रीब अल्लाह का ज़िक्र करो और उस के ज़िक्र का बयान उस तरह करो, जैसे कि उस ने तुम्हें निर्देश दिये हैं, हालांकि तुम उस से पहले गुमराहों में थे ।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۠ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّاۗلِّيْنَ ﴿198﴾

से एहराम बांधना, (२) क़िरान - हज्ज और उमर: दोनो का इरादा एक साथ करके एहराम बांधना, इन दोनों हालतों में हज्ज के सभी अरकान पूरा किये बिना एहराम खोलना जायज़ (उचित) नहीं है । (३) हज्ज-ए-तमत्तुअ - इस में भी हज्ज और उमर: दोनो का इरादा होता है, लेकिन पहले केवल उमर: का इरादा करके एहराम बांधा जाता है, और फिर उमर: करके एहराम खोल दिया जाता है और फिर ८ ज़िलहिज्जा को ही हज्ज के लिए मक्का ही से दोबारा एहराम बांधा जाता है, तमत्तुअ का मतलब है, फ़ायेदा उठाना, या एहराम उतारकर उमर: और हज्ज के बीच फ़ायेदा उठा लिया जाता है, हज्ज-क़िरान और हज्ज-तमत्तुअ दोनो में ही एक हदी (एक जानवर की क़ुर्बानी) देनी है । इस आयत में इसी हज्ज तमत्तुअ के हुक्म का बयान है, तमत्तुअ करने वाला ताक़त के ऐतबार से १० ज़िलहिज्जा को एक जानवर की क़ुर्बानी दे, अगर क़ुर्बानी देनें की ताक़त न हो, तो तीन रोज़े हज्ज के दिनों में और सात घर जाकर पूरा करे, हज्ज के दिन, जिन में रोज़े रखने है ९ ज़िलहिज्जा (अरफ़ात का दिन) से पहले या तशरीक़ के दिन हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[1] या तमत्तुअ और उसके कारण हदी या रोज़े सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो मक्कावासी न हों ।

[2] और यह हैं शव्वाल, ज़ीक़ाद, और ज़िलहज्ज के दस दिन । मतलब यह है कि उमर: तो साल के दिनों में भी हो सकता है, लेकिन हज्ज तो कुछ मुक़र्रर दिनों में ही होता है, इसलिए उसका एहराम हज्ज के महीनों के सिवाय बांधना जायज़ नहीं । (इब्ने कसीर)

[3] फ़ज़्ल का मतलब तिजारत और काम है यानी हज्ज का सफ़र करते वक़्त तिजारत करने में कोई रुकावट नहीं ।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (199)

१९९. फिर तुम उस जगह से लौटो जिस जगह से सभी लोग लौटते हैं और अल्लाह (तआला) से इस्तेग़फ़ार करते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ (200)

२००. फिर जब तुम हज के हर काम पूरे कर लो, तो अल्लाह (तआला) को याद करो, जिस तरह से तुम अपने बुज़ुर्गों को याद करते थे, बल्कि उससे ज़्यादा।[1] कुछ लोग वह भी हैं जो कहते है "हमारे रब! हमें इस दुनिया में दे दे, ऐसे लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है।"

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (201)

२०१. और कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते हैं, "ऐ हमारे पालनहार! हमें इस दुनिया में भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई अता कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा दे।"

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ (202)

२०२. ये वह लोग हैं जिन के लिए उन के अमलों का हिस्सा है और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब लेने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ (203)

२०३. और अल्लाह (तआला) की याद उन गिनती के कुछ दिनों (तशरीक़ के दिन) में करो,[2] दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई गुनाह नहीं, और जो पीछे रह जाये उस पर भी कोई गुनाह नहीं[3] यह परहेज़गार (महान इंसान)

The Ummah Technology Mission

[1] अरब के लोग हज्ज के बाद मिना के मुक़ाम पर मेला लगाते और अपने-अपने बुज़ुर्गों की तारीफ़ें करते, मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब १० ज़िलहिज्जा को कंकरियाँ मारकर, क़ुर्बानी देकर, सिर मुंडवाकर, काअबा का तवाफ़ करके और सफ़ा और मरवा के बीच सअई करके छुटकारा पाओ तो उसके बाद तीन दिन मिना में रुकना है, और वहाँ अल्लाह को बहुत याद करो, जैसे कि जाहिलियत के दौर में तुम अपने बुज़ुर्गों की चर्चा करते थे।

[2] मतलब तशरीक़ के दिन हैं, यानी ११, १२ और १३ ज़िलहिज्जा। इन दिनों में अल्लाह तआला के ज़िक्र से मतलब यह है कि ऊँची आवाज़ के साथ सुन्नत के ऐतबार से मुक़र्रर तकबीर कहे, केवल फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हदीस के आधार पर मशहूर है), बल्कि हर वक़्त यह तकबीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहम्द) जमरात को कंकरियाँ मारते वक़्त हर कंकरी के साथ तकबीर पढ़नी सुन्नत के अनुरूप (मुताबिक़) है।

[3] जमरात को कंकरियाँ मारना, तीन दिन बेहतर हैं, लेकिन अगर कोई दो दिन के बाद मिना से वापस आ जाये तो उसका भी हुक्म है।

के लिए है, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर जमा किये जाओगे।

२०४. और कुछ लोगों की दुनियावी बातें आप को खुश कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह करता है, हालांकि हक़ीक़त में वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿204﴾

२०५. और जब वह लौटकर जाता है, तो ज़मीन में फ़साद फैलाने, खेती और नसल की बर्बादी की कोशिश में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) फ़साद को पसंद नहीं करता है।

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿205﴾

२०६. और जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमण्ड उसे गुनाह पर उकसा देता है, ऐसे के लिए सिर्फ़ जहन्नम ही है, और बेशक वह बहुत बुरी जगह है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿206﴾

२०७. और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की मर्ज़ी हासिल करने के लिए अपनी जान तक बेच डालते हैं[1] और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बड़ी शफ़क़त करने वाला है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ﴿207﴾

२०८. ऐ ईमानवालो! इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल हो और शैतान के पद चिन्हों की पैरवी न करो,[2] वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿208﴾

२०९. अगर तुम निशानियों के आ जाने के बावजूद भी फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿209﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह आयत, कहते हैं कि हज़रत सुहैब रूमी के लिए उतरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो काफ़िरों ने कहा कि यह माल तो यहां का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, हज़रत सुहैब रूमी ने यह सारा माल उन के हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो गये, आप ने सुनकर कहा "सुहैब ने फ़ायेदेमंद तिजारत किया है" दो बार कहा। (फ़तहुल क़दीर)

[2] ईमानवालों को कहा जा रहा है कि पूरी तरह से इस्लाम में दाख़िल हो जाओ, इस तरह न करो कि जो बातें तुम्हारे अपने फ़ायेदा और मन के मुताबिक़ हैं तो उन्हें अपना लो, बाक़ी को छोड़ दो। इसी तरह जो बातें तुम छोड़ आये हो उसे दीन इस्लाम में मिलावट करने की कोशिश न करो, बल्कि सिर्फ़ दीन इस्लाम के क़ानून को पूरी तरह से अपनाओ।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿210﴾

२१०. क्या लोगों को इस बात का इंतज़ार है कि अल्लाह (तआला) ख़ुद बादलों के झुरमुट में आ जाये, और फ़रिश्ते भी, और काम का अन्त कर दिया जाये, अल्लाह ही की तरफ़ सभी काम लौटाये जाते हैं।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿211﴾

२११. इस्राईल की औलाद से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी वाज़ेह निशानियाँ अता कीं[1] और जो अल्लाह (तआला) की नेमत अपने पास पहुँच जाने के बावजूद बदल डाले (वह जान ले) कि अल्लाह (तआला) भी कठिन सज़ाओं का देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿212﴾

२१२. काफ़िरों के लिए दुनियावी ज़िन्दगी मुज़य्यन कर दी गई है, और वह ईमानवालों से हँसी मज़ाक़ करते हैं[2] मगर जो परहेज़गार हैं क़यामत के दिन उनसे बहुत बड़े होंगे, अल्लाह (तआला) जिसे चाहता है बेशुमार अता करता है।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿213﴾

२१३. हक़ीक़त में लोग एक ही उम्मत थे, फिर अल्लाह (तआला) ने नबियों को ख़ुशख़बरी देने और आगाह करने को भेजा और उन के साथ किताब उतारी, ताकि लोगों के हर इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला हो जाये। और केवल उन्हीं लोगों ने जो उसे दिये गये थे अपने पास दलील आ जाने के बावजूद आपसी हसद और घमण्ड की वजह से उस में इख़्तिलाफ़ किया, इसलिए अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के इस इख़्तिलाफ़ में भी सच्चाई की तरफ़ अपनी इजाज़त के ज़रिये हिदायत की और अल्लाह जिसको चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है।

---

[1] मिसाल के तौर पर मूसा की छड़ी, जिस के ज़रिये हम ने जादूगरों के जादू को तोड़ा, समुद्र में रास्ता बनाया, पत्थर से बारह चश्में निकाले, बादलों का साया, मन्न व सलवा का उतरना और जो अल्लाह तआला की ताक़त और हमारे पैग़म्बरों की सच्चाई के सुबूत थे, लेकिन उस के बाद भी उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी की।

[2] चूँकि मुसलमानों की अकसरियत ग़रीबों पर आधारित (मुश्तमिल) थी, जो दुनियावी दौलत और आराम से मुक्त थे, इसलिए काफ़िर यानि मक्का के क़ुरैश उनका मज़ाक़ उड़ाते थे, जैसाकि धनवानों का हर ज़माने में यही अमल रहा है।

The Ummah Technology Mission

٢١٤. क्या तुम यह विचार (ख़्याल) कर बैठे हो कि जन्नत में चले जाओगे? अगरचे अब तक तुम पर वह हालत नहीं आयी जो तुम से अगलों पर आयी[1] उन्हें ग़रीबी और बीमारी पहुँची, और वह यहां तक झिझोड़े गये कि रसूल और उन के साथ के ईमान वाले लोग कहने लगे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी? सुन रखो कि अल्लाह की मदद क़रीब ही है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿214﴾

२१५. आप से पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए कि जो माल तुम ख़र्च करो वह माँ-बाप के लिए, रिश्तेदारों, यतीमों व ग़रीबों और मुसाफिरों के लिए है और तुम जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह (तआला) को उस का इल्म है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿215﴾

२१६. तुम पर जिहाद फ़र्ज किया गया, अगरचे कि वह तुम्हारे लिए कठिन मालूम होता हो, हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरी जानो और हक़ीक़त में वही तुम्हारे लिए भली हो, और यह भी हो सकता है कि तुम जिस चीज़ को अच्छी समझो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, सच्चा इल्म अल्लाह ही को है, तुम सिर्फ़ अंजान हो।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿216﴾

[1] मदीना की ओर हिजरत (मक्का से मदीना मजहबे इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से जो हिजरत हुई है) के बाद जब मुसलमानों को यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और अरब के मूर्तिपूजकों के ज़रिये कई तरह के कष्ट और कठिनाईयां पहुचने के बाद कुछ मुसलमानों ने नबी ﷺ से शिकायत की जिस पर मुसलमानों को अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर तसल्ली दी और ख़ुद नबी ﷺ ने फ़रमाया तुम से पहले लोगों को उन के सिर से लेकर पैर तक आरे से चीरा गया और लोहे की कंघी के द्वारा उनका गोश्त खुर्चा गया, लेकिन यह ज़ुल्म और तकलीफ़ें भी उनको अपने दीन से नही फिरा सकीं। फिर फ़रमाया "अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला इस मामले को पूरा (यानी इस्लाम को फ़त्ह) करेगा।" यहां तक कि एक सवार सन्आ से (यमन की राजधानी है) हज़र मूत तक अकेला सफर करेगा और उसे अल्लाह के सिवाय किसी का डर न होगा।

The Ummah Technology Mission

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۭ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۭ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۤ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۭ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۭ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَھُوَ كَافِرٌ فَاُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ ھُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (217)

२१७. लोग आप से हुरमत वाले महीनों में जंग के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए उन में जंग करना बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, उन के साथ कुफ्र करना, मस्जिदे हराम से रोकना और वहाँ के रहने वालों को वहाँ से निकालना अल्लाह के क़रीब उस से भी बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है,[1] यह लोग तुम से लड़ाई-झगड़ा करते ही रहेंगे यहाँ तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें[2] और तुम में से जो लोग अपने धर्म से पलट जायें और उसी कुफ्र की हालत में मरें, उन के आमाल दुनिया और आख़िरत के सभी बर्बाद हो गये, यह लोग जहन्नमी होंगे और हमेशा जहन्नम में ही रहेंगे।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ ھَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (218)

२१८. हाँ जिन्होंने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया (दीन की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह की राह में लड़े) वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह (तआला) बड़ा बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] रजब, ज़ुलक़ादा, ज़िलहिज्जा, और मोहर्रम, यह चार महीने जाहिलियत मे भी हुरमत वाले महीने माने जाते थे, जिन मे क़त्ल और जंग करना अच्छा नहीं समझा जाता था, इस्लाम ने भी इन के एहतेराम को उसी तरह रखा।

[2] जब यह अपनी चालों और साज़िशों और तुम्हें मुर्तद्द (इस्लाम धर्म से फिरने वाला) बनाने की कोशिश से रुकने वाले नहीं, तो फिर तुम उन से सामना करने में हुरमत वाले महीने की वजह से क्यों रुके रहो?

[3] जो इस्लाम धर्म से पलट जाये यानी मुर्तद्द हो जाये (यदि वह माफ़ी न माँगे) तो उसकी दुनियावी सज़ा क़त्ल है, हदीस में है (مَن بدّل دينه فاقتلوه) (सहीह बुख़ारी, हदीस ३०१७, किताबुल जिहाद) इस आयत में उसके आख़िरत की सज़ा का बयान है।

२१९. लोग आप से शराब और जुआ के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों को इस से दुनियावी फ़ायेदा भी होता है, लेकिन उनका गुनाह उन के फ़ायेदा से कहीं ज़्यादा है, आप से यह भी पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए ज़रूरत से ज़्यादा को। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपना हुक्म वाज़ेह तौर से तुम्हारे लिए बयान कर रहा है कि तुम सोच समझ सको।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۭ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ
كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ
نَّفْعِهِمَا ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ڛ قُلِ
الْعَفْوَ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿219﴾

२२०. दुनियावी और आख़िरत के अमलों को, और आप से यतीमों के बारे में भी सवाल करते हैं।[1] आप कह दीजिए कि उन की भलाई करना ही अच्छा है, तुम अगर अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, बदनियत और नेक नियत सब को अल्लाह पूरी तरह से जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हे कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ
اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ
لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿220﴾

२२१. और मुशरिक औरतों से उस वक़्त तक शादी न करो जब तक कि वह ईमान न ले आयें।[2] ईमानवाली लौंडी (दासी) भी मुशरिक (बहुदेववादी) आज़ाद औरत से बेहतर है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक ही अच्छी लगती हो और न मुशरिक मर्दों को अपनी औरतों से विवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आयें, ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) आज़ाद

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ
وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ
وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿221﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] जब यतीमों के माल ज़ुल्म करके खाने वालों के लिए सख़्त सज़ा का हुक्म आया, तो सहाबा डर गये और यतीमों की हर चीज़ अलग कर दी, यहाँ तक कि खाना-पीना अलग कर दिया, अगर उन के खाने-पीने की चीज़ बच जाती, तो उसको इस्तेमाल में न लाते, जिससे वह चीज़ ख़राब हो जाती; इस डर से कि कहीं इस सज़ा के हक़दार न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

[2] मुशरिक औरतों से मुराद मूर्तिपूजक या मुशरिक औरतें हैं, क्योंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) औरतों से शादी करने का हुक्म क़ुरआन ने दिया है, लेकिन किसी मुसलमान औरत की शादी अहले किताब मर्दों से नहीं हो सकती, फिर भी हज़रत उमर ﷺ ने मसलहतन यहूदी इसाई औरतों से शादी करना अच्छा नही समझा है। (इब्ने कसीर)

मुशरिक (से ज़्यादा अच्छा है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक अच्छा लगे, ये लोग जहन्नम की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ़ और मग़फ़िरत की तरफ़ अपने हुक्म से बुलाता है, वह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए बयान कर रहा है, ताकि नसीहत हासिल करें।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْھُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْھُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّـوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (222)

२२२. और आप से माहवारी के बारे में सवाल करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी है, माहवारी के वक़्त औरतों से अलग रहो[1] और जब तक वह पाक न हो जायें उनके क़रीब न जाओ, हाँ जब वह पाक हो जायें, तो उन के पास जाओ जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें इजाजत दी है अल्लाह माफ़ी माँगने वाले को और पाक रहने वाले को पसंद करता है।

نِسَاۗؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۡ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (223)

२२३. तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारी खेतियाँ हैं, अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो आओ और अपने लिए (सवाब) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम उस से मिलने वाले हो और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (224)

२२४. और अल्लाह (तआला) को अपनी क़समों का (इस तरह) निशाना न बनाओ कि भलाई और परहेज़गारी और लोगों के बीच सुधार करने को छोड़ बैठो।[2] और अल्लाह (तआला)

[1] अपनी जवानी पर पहुँचने पर हर औरत को जो माहवारी का ख़ून आता है, उसे हैज़ कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रूप (ग़ैर फ़ितरी) से बीमारी की वजह से जो ख़ून आता है, उसे इस्तेहाज़ा कहते हैं, जिसका हुक्म व क़ानून हैज़ से मुख़तलिफ़ है, हैज़ के दिनों में औरत को नमाज़ माफ़ है, और रोज़ा रखने से रोका गया है, लेकिन उन के बदले दूसरे दिनों में रखना फ़र्ज़ है, मर्दों के लिए सिर्फ़ जिमाअ से रोका गया है।

[2] यानी ग़ुस्सा में ऐसी क़सम मत उठाओ कि मैं फ़लाँ इंसान के ऊपर भलाई नहीं करूँगा, फ़लाँ इंसान से नहीं बोलूँगा, फ़लाँ इंसान के बीच सुलह नहीं कराऊँगा। इस तरह की क़समों के बारे में हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर इस तरह की क़सम खा भी लो तो उसे तोड़ दो, और क़सम का कफ़्फ़ार: (क़सम खाने के बाद अगर तोड़ दी जाये, तो उसकी सज़ा) अदा करो। (क़सम के कफ़्फ़ारे के लिए देखिए सूर: अल-मायेद:, आयत ८९)

The Ummah Technology Mission

सुनने वाला जानने वाला है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿225﴾

२२५. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी उन क़समों पर न पकड़ेगा जो मज़बूत न हों।[1] हां तुम्हारी पकड़ उस चीज़ पर है, जो तुम्हारे दिलों का अमल है, अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला सहनशील है।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿226﴾

२२६. जो लोग अपनी बीवियों (पत्नियों) से (न मिलने की) क़सम खायें उन के लिए चार महीने की मुद्दत है।[2] फिर अगर वह लौट आयें, तो अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿227﴾

२२७. और अगर तलाक़ का ही इरादा कर लें तो अल्लाह (तआला) बहुत सुनने वाला जानने वाला है।

---

[1] यानी जो बिना सोचे समझे और आदत के तौर पर हो, लेकिन जान बूझकर क़सम खाना बहुत बड़ा गुनाह है।

[2] إيلاء का मतलब क़सम खाने के हैं अगर कोई शौहर क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी के साथ एक माह या दो माह (मिसाल के तौर पर) सम्बन्ध नहीं रखूंगा, फिर क़सम की मुद्दत पूरी करके कोई सम्बन्ध स्थापित (क़ायम) करता है, तो कोई सज़ा नहीं है, और अगर फिर क़सम की मुद्दत पूरी होने के पहले सम्बन्ध स्थापित कर ले तो क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

अगर चार माह की मुद्दत से ज़्यादा या बिना मुद्दत के क़सम खायी गयी है, तो उन के लिए इस आयत में मुद्दत मुक़र्रर कर दी गयी है कि वह चार माह बाद अगर चाहे तो सम्बन्ध स्थापित कर ले या उन्हें तलाक़ दे दे (उसे चार माह से ज़्यादा लटकाये रहने का हुक्म नहीं है) पहली हालत में उसे क़सम तोड़ने की सज़ा भुगतना पड़ेगा और अगर दोनों में से कोई हालत नहीं अपनायेगा, तो अदालत उसको दोनों में से किसी एक को अपनाने पर मजबूर करेगा कि वह उस से सम्बन्ध स्थापित कर ले या तलाक़ दे दे ताकि उस स्त्री पर ज़ुल्म न हो। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (228)

२२८. तलाक़ शुदा औरतें अपने आप को तीन माहवारी तक रोके रखें।[1] उन के लिये जायज़ नहीं कि अल्लाह ने उन के रिहम में जो पैदा किया हो उसे छिपायें, अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो। उनके शौहर को इस मुद्दत में उन्हें लौटा लेने का पूरा हक़ हैं, अगर उनका इरादा सुधार का हो,[2] औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं, जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ।[3] हाँ, मर्दों की औरतों पर फ़ज़ीलत है, और अल्लाह (तआला) जबरदस्त हिक्मत वाला है।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (229)

२२९. ये तलाक़ दो बार है[4] फिर या तो अच्छाई से रोकना।[5] या जायज़ तरीक़े से छोड़ देना है[6] और तुम्हें उचित नहीं कि तुम ने उन्हें जो दिया है, उस में से कुछ भी लो, हाँ! यह और बात है कि दोनों को अल्लाह के हुदूद क़ायम न रखने का डर हो, इसलिए यदि तुम्हें डर हो कि यह दोनों अल्लाह के हुदूद क़ायम न रख सकेंगे, तो स्त्री आज़ादी हासिल करने के लिए कुछ दे डाले, इस में दोनो पर कोई गुनाह नहीं[7] यह अल्लाह के हुदूद हैं, होशियार। इन से

---

[1] इस से मुराद वह तलाक़ शुदा औरतें है जो गर्भवती (हामला) भी न हो (क्योंकि हामला औरत के लिए प्रसव की मुद्दत मुक़र्रर है) जिसे जिमाअ से पहले ही तलाक़ हो गयी हो वह भी न हो (क्योंकि उसकी कोई इद्दत ही नहीं है) बूढ़ी भी न हो जिसको माहवारी आना बंद हो गया हो (क्योंकि उनकी इद्दत तीन माह है)

[2] लौटाने से शौहर का मक़सद अगर परेशान करना न हो, तो शौहर को इद्दत के अन्दर लौटने का पूरा हक़ है, बीवी के वली को इस में रुकावट डालने का कोई हक़ नहीं है।

[3] यानी दोनों के हक़ एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनको पूरा करने के दोनों धार्मिक नियमों से प्रतिबन्धित है, लेकिन मर्द को औरत पर फ़ज़ीलत प्राकृतिक शक्ति (फ़ितरी ताक़त) में, जिहाद (धर्मयुद्ध) के हुक्म में, जायदाद के बँटवारे में औरत से दुगना मर्द को तलाक़ और लौटाने के हक़ (वग़ैरह) में हासिल हैं।

[4] यानी वह तलाक़ जिस में शौहर को रुजूअ का हक़ है, वह दो बार है। पहली बार तलाक़ के बाद भी और दूसरी बार तलाक़ के बाद भी शौहर अपनी बीवी से सम्बन्ध फिर से क़ायम कर सकता है, तीसरी बार तलाक़ देने के बाद यह सम्बन्ध स्थापित करने का हक़ नहीं।

[5] यानी सम्बन्ध क़ायम करके उसे अच्छी तरह से बसाना।

[6] यानि तीसरी बार तलाक़ देकर।

[7] इस में "ख़ुलअ" का बयान है, जिस के अनुसार बीवी अपने शौहर से रिश्ता तोड़ना चाहे तो

The Ummah Technology Mission

आगे न बढ़ना और जो लोग अल्लाह के हुदूद को तजाउज़ कर जायें, वह ज़ालिम हैं।

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (230)

२३०. फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक़ दे दे, तो अब वह उस के लिए हलाल नहीं जब तक कि वह स्त्री उस के सिवाय दूसरे से विवाह न करे, फिर अगर वह तलाक़ दे दे, तो उन दोनों को मेलजोल कर लेने में कोई गुनाह नहीं।[1] जबकि वे जान लें कि अल्लाह के हुदूद को क़ायम रख सकेंगे, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद हैं, जिन्हें वह जानने वाले के लिए बयान कर रहा है।

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۗ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۡ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (231)

२३१. और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत (तीन माहवारी की मुद्दत को कहते हैं) ख़त्म करने के क़रीब हों, तो अब उन्हें अच्छी तरह से बसाओ या भलाई के साथ अलग कर दो। और उन्हें नुक़सान पहुँचाने के मक़सद से ज़ुल्म व ज़्यादती करने के लिए न रोको, जो इंसान ऐसा करे उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम अल्लाह के हुक्म का मज़ाक़ न बनाओ।[2] और अल्लाह की नेमत जो तुम पर है याद करो और जो कुछ किताब व हिक्मत उस ने उतारी है, जिस से तुम्हें तालीम दे रहा है उसे भी, और अल्लाह (तआला) से डरते रहा

उस हालत में शौहर को हक़ है कि वह अपना महर वापस ले ले। पति अगर रिश्ता तोडना न क़ुबूल करे, तो अदालत शौहर को तलाक़ देने का हुक्म करेगी, अगर वह उसे न माने तो अदालत शादी ख़त्म करेगी। यानि यह ख़ुलअ, तलाक़ के ज़रिये भी हो सकता है और तोड़नें के ज़रिये भी दोनो हालतों में इद्दत एक माहवारी है।

[1] इस तलाक़ से मुराद तीसरी तलाक़ है और इसके बाद शौहर को न तो सम्बन्ध स्थापित करने का हक़ है और न शादी करने का, अब यह औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करे और वह अपनी मर्ज़ी से तलाक़ दे या उसकी मौत हो जाये, तो उसके बाद वह अपने पहले शौहर से शादी कर सकती है, लेकिन हमारे देश में जो इस प्रकार का "हलाला" करने और कराने की बुरी रस्म है। नबी ﷺ ने ऐसे "हलाला" करने और कराने वाले पर लानत की है, हलाला की वजह से की गई शादी, शादी नहीं होती यह ज़िना है, इस शादी से औरत अपने शौहर के लिए हलाल नहीं होगी।

[2] कुछ लोग मज़ाक़ में तलाक़ दे देते या शादी कर लेते या आज़ाद कर देते, फिर कहते कि मैंने तो मज़ाक़ किया था। अल्लाह तआला ने इसे अपनी आयत में मज़ाक़ कहा है जिसका मक़सद इस तरह के कामों से रोकना है, इसलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मज़ाक़ से भी अगर ऊपर बयान किया गया काम करेगा तो वह हक़ीक़त माना जायेगा और मज़ाक़ की तलाक़, शादी और आज़ादी लागू हो जायेगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

करो और याद रखो कि अल्लाह (तआला) हर एक चीज़ को जानता है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ مِنكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

२३२. और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें उन के पतियों से शादी करने से न रोको, जबकि वह आपस में भलाई के ऐतबार से राज़ी हों। यह तालीम उन्हें दी जाती है जिन्हें तुम में से अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर यक़ीन और ईमान हो, इस में तुम्हारी अच्छी सफ़ाई और पाकीज़गी है और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۖ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

२३३. और मायें अपनी औलादों को पूरे दो साल दूध पिलायें, जिनका इरादा दूध पिलाने की पूरी मुद्दत का हो,[1] और जिनकी औलाद हैं उनकी ज़िम्मेदारी है कि उनको रोटी कपड़ा दे, जो भलाई के साथ हो। हर एक इंसान को इतनी ही कठिनाई दी जाती है, जितनी उसकी ताक़त हो, माँ को उसकी औलाद की वजह से या बाप को उसकी औलाद की वजह से उसे कोई नुकसान न पहुँचाया जाये,[2] वारिस पर भी उसी जैसी ज़िम्मेदारी है, फिर अगर दोनों (यानी माँ-बाप) अपनी रज़ामंदी और आपसी इरादा से दूध छुड़ाना चाहें, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम अपनी औलादों को दूध पिलाना चाहते हो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं,

---

[1] इस आयत में दूध पिलाने के मसले का हल बयान किया गया है, इसमें पहली बात कही गयी है वह यह है कि जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहे, तो यह मुद्दत दो साल की है, इन लफ़्ज़ों से इस से कम मुद्दत तक दूध पिलाने की गुंजाईश निकलती है, दूसरी बात यह कि दूध पिलाने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दो साल है।

[2] माँ को तकलीफ़ पहुँचाने का मतलब यह है कि जैसे माँ अपने बच्चे को अपने पास रखना चाहे लेकिन ममता को ठुकराकर उसका बच्चा उस से ज़बरदस्ती छीन लिया जाये या यह कि बिना ख़र्च की ज़िम्मेदारी लिए उसको दूध पिलाने पर मजबूर किया जाये, बाप को तकलीफ़ पहुँचाने का मतलब यह है कि माँ दूध पिलाने से इंकार कर दे या उसकी ताक़त से ज़्यादा उस से धन की माँग करे।

The Ummah Technology Mission

जबकि तुम उन के दुनियावी दस्तूर के ऐतबार से उन को दे दो, अल्लाह तआला से डरते रहो और जानते रहो कि अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (234)

२३४. तुम में से जो लोग मर जायें और बीवियाँ छोड़ जायें, वह औरते अपने आप को चार महीने और दस (दिन) इद्दत में रखें।[1] फिर जब मुद्दत ख़त्म कर लें तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे हर अमल को जानने वाला है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاۗءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْھُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ڛ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ (235)

२३५. और तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं कि तुम इशारा से या अस्पष्ट रुप से इन औरतों से शादी के बारे में कहो या अपने दिल में इरादा छिपाओ, अल्लाह (तआला) को इल्म है कि तुम ज़रूर उनको याद करोगे, लेकिन तुम उनसे छिपाकर वादा न कर लो। हाँ, यह बात और है कि तुम अच्छी बात बोला करो और जब तक इद्दत की मुद्दत पूरी नहीं हो शादी का बन्धन मज़बूत न करो। जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी इल्म है, तुम उस से डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला और सहनशील है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْھُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ښ وَّمَتِّعُوْھُنَّ ۚ عَلَي الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَي الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَي الْمُحْسِنِيْنَ (236)

२३६. अगर तुम औरतों को बिना हाथ लगाये और बिना महर मुक़र्रर किये तलाक़ दे दो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ फ़ायेदा दो, मालदार अपने हिसाब और ग़रीब अपनी ताक़त के हिसाब से दस्तूर के हिसाब से अच्छा फ़ायेदा दें। भलाई करने वालों के लिए यह ज़रूरी है।[2]

The Ummah Technology Mission

---

[1] मौत की यह इद्दत हर बीवी के लिए है शौहर ने उस से जिमाअ किया हो या न किया हो। गर्भवती (हामला) के लिए यह क़ानून नहीं क्योंकि उसकी इद्दत प्रसव हो जाना है।

[2] यह उस औरत के बारे में हुक्म है कि शादी के वक़्त महर (स्त्री धन) मुक़र्रर नहीं की गयी थी और शौहर हमबिस्तरी करने के पहले तलाक़ भी दे दे, तो उसे कुछ न कुछ फ़ायेदा देकर विदा

وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (237)

२३७. और अगर तुम औरतों को इस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और तुम ने उनका महर भी मुक़र्रर किया हो, तो मुक़र्रर महर का आधा (महर) दे दो, यह बात और है कि वह ख़ुद माफ़ कर दें, या वह इंसान माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है। तुम्हारा माफ़ कर देना तक़्वा से बहुत क़रीब है और आपसी फ़ज़ीलत को न भूलो। बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ (238)

२३८. नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ासकर बीच वाली नमाज़ की[1] और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रतापूर्वक (बाअदब) खड़े रहा करो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ (239)

२३९. अगर तुम्हें डर हो तो पैदल ही या सवार ही सहीह, और अगर शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की बड़ाई को बयान करो जिस तरह कि उस ने तुम्हें उस बात की तालीम दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।[2]

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (240)

२४०. और जो तुममें से मर जायें और बीवियाँ छोड़ जायें, वह वसीयत कर जायें कि उनकी बीवियाँ साल भर फ़ायेदा उठायें[3] उन्हें कोई न निकाले, और अगर वे ख़ुद निकल जायें तो तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं जो वह अपने लिए अच्छाई से करें अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

The Ummah Technology Mission

करो, यह फ़ायेदा (तलाक़ का फ़ायेदा) मर्द की ताक़त के हिसाब से होना चाहिए या मालदार अपने हिसाब और ग़रीब अपनी ताक़त भर दे।

[1] बीच वाली नमाज़ से मुराद अस्र नमाज़ है, जिसको इस हदीस रसूलुल्लाह ﷺ के आधार पर मुक़र्रर कर दिया गया है, जो जंग ख़न्दक़ के दिन अस्र की नमाज़ को صلوة وسطى कहा है।

[2] यानी दुश्मन से डर की वजह से जिस तरह भी मुमकिन हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर बैठे हुए नमाज़ पढ़ लो, लेकिन जब डर की हालत ख़त्म हो जाये तो उसी तरह नमाज़ पढ़ो, जिस तरह सिखलाया गया है।

[3] यह आयत अगरचे तरतीब में बाद की है लेकिन मन्सूख़ है, इसकी मन्सूख़ी की आयत पहले आ चुकी है जिस में मौत की इद्दत चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय विरासत की आयत ने बीवी का हिस्सा मुक़र्रर कर दिया है, अब शौहर को बीवी के लिए वसीयत (उत्तरदान) करने की कोई ज़रूरत नहीं रही न घर और न ख़र्च की।

२४१. और तलाक़ दी हुई औरतों को अच्छी तरह फ़ायेदा पहुँचाना परहेज़गारों पर ज़रूरी है।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿241﴾

२४२. इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) को बयान करता है ताकि तुम समझो।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿242﴾

२४३. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जो हज़ारों की तादाद में मौत की वजह से अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा कर दिया।[1] बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल वाला है मगर ज़्यादा लोग शुक्रिया अदा नहीं करते।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿243﴾

२४४. और अल्लाह की राह में लड़ो और यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿244﴾

२४५. कौन अल्लाह को अच्छा उधार देगा[2] जिसे वह फिर उसे कई गुना ज़्यादा अता करेगा और अल्लाह ही कमी और ज़्यादती करता है और तुम उसी की ओर दोबारा जाओगे।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿245﴾

२४६. क्या आप ने इस्राईल के वंश की "मूसा" के बाद की जमाअत को नहीं देखा जब उन्होंने अपने नबी (ईशदूत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें उन्होंने कहा कि हो सकता है कि जिहाद फ़र्ज़ हो जाने के बाद, तुम जिहाद न करो। उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह की राह मे जिहाद क्यों न करेंगे? हम तो अपने घरों से उजाड़े गये हैं और औलादों से दूर कर दिये गये हैं। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ, तो सिवाय थोड़े से इंसानों के सब फिर गये और अल्लाह

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿246﴾

[1] यह हादसा किसी पिछली उम्मत का है, जिसकी तफ़सील किसी हदीस में नहीं मिलती।

[2] अच्छे उधार से मुराद अल्लाह की राह में और जिहाद में माल सदक़ा करना है यानी जान की तरह माल देने में भी संकोच न करो, माल मे बढ़ोत्तरी और कमी भी अल्लाह के हाथ में है और वह दोनों तरह से तुम्हारा इम्तेहान लेता है। कभी माल में बढ़ोत्तरी करके और कभी माल में कमी करके, फिर अल्लाह की राह मे ख़र्च करने मे कमी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई-कई गुना बढ़ोत्तरी करता है, कभी ज़ाहिरी तौर से कभी छिपे तौर से और रूहानी तौर पर और आख़िरत में तो ज़रूर उस मे अधिकता आश्चर्यचकित होगी।

The Ummah Technology Mission

जालिमों को अच्छी तरह से जानता है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ (247)

२४७. और उन से उन के नबी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा बादशाह बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उस से बहुत अधिक राज्य के हक़दार हम हैं, उसको तो धन की ज़्यादती भी नहीं अता की गई है। उस (नबी) ने कहा सुनो! अल्लाह (तआला) ने उस को तुम पर फ़ज़ीलत दी है और उसे इल्म और जिस्मानी ताक़त भी ज़्यादा अता किया है[1] हक़ीक़त बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना मुल्क दे, अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म वाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (248)

२४८. और उन के नबी ने फिर उन से कहा, उस के मुल्क की वाजेह निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा[2] जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिल के सुकून का सामान है और मूसा की औलाद और हारून की

[1] हज़रत तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे इस्राईल की औलादों के बादशाहों का सिलसिला चला आ रहा था, यह ग़रीब और एक आम सेनानी थे, जिस पर उन्होंने आवाज़ उठायी थी, पैग़म्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है। अल्लाह ने उन्हें तैनात किया है, फिर भी नेतृत्व (क़ियादत) के लिए माल से ज़्यादा अक़्ल, इल्म और जिस्मानी ताक़त की ज़रूरत है और तालूत इस में तुम सभी से अच्छे हैं, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इस पद के लिए चुन लिया है।

[2] सन्दूक यानी ताबूत, जो तोब से है, जिसके मतलब पलटने के हैं, क्योंकि इस्राईल की औलाद प्रसाद (तबर्रुक) के लिए इसकी ओर पलटते थे। (फ़तहुल क़दीर) इस ताबूत में हज़रत मूसा व हारून عليهما السلام की पाक चीज़ें थीं, यह ताबूत भी उन के दुश्मन उन से छीन कर ले गये थे। यह ताबूत अल्लाह तआला ने निशानी के शक्ल में फ़रिश्तों के ज़रिये हज़रत तालूत के घर के दरवाज़े पर रखवा दिया, इसे देखकर इस्राईल की औलादें ख़ुश भी हुईं और इसे अल्लाह तआला की तरफ़ से निशानी मानकर तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उन के लिए एक चमत्कार (आयत) व फ़त्ह और सब्र की वजह बना दिया سَكِينَة का मतलब ही अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ास मदद का उतरना जिसे वह अपने ख़ास बन्दों पर उतारता है जिसकी वजह से भयानक जंग में जब बड़े-बड़े बहादुरों के दिल काँप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल दुश्मन के डर और धाक से ख़ाली और फ़त्ह व कामयाबी की उम्मीद से भरे होते हैं। इस से मालूम हुआ कि नबियों की अवशेष (बाक़िआत) अल्लाह के हुक्म से ज़रूर फ़ज़ीलत और उपयोगिता (अहमियत) रखती हैं, लेकिन यह ज़रूरी है कि वह सही तरीक़े से उनकी (तबर्रुकात) हो।

The Ummah Technology Mission

औलाद का बाक़ी छोड़ा हुआ सामान है, फ़रिश्ते उसे उठाकर लायेंगे, बेशक यह तो तुम्हारे लिए वाजेह (स्पष्ट) निशानी है, अगर तुम ईमानदार हो।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُو اللَّهِ كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ (249)

२४९. फिर जब तालूत सेना लेकर निकले तो कहा सुनो एक नदी[1] के जरिये अल्लाह को तुम्हारा इम्तिहान लेना है तो जो उस से पानी पियेगा वह मेरा नहीं और जो उस में से न चखे वह मेरा है, यह और बात है कि अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले तो कुछ के सिवाय बाक़ी सभों ने पानी पी लिया, (हज़रत) तालूत जब नदी से पार हो गये और जो उन के साथ ईमानदार थे तो उन्होंने कहा कि आज तो हम में ताक़त नहीं कि जालूत और उसकी फ़ौजों से लड़ें,[2] लेकिन जिन्हे अल्लाह से मिलने पर यक़ीन था उन्होंने कहा कि बहुत सी छोटी जमाअत अल्लाह के हुक्म से भारी जमाअतों पर फ़त्ह हासिल कर लेती हैं और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

जिस तरह इस ताबूत में हक़ीक़त में हज़रत मूसा और हारुन की पाक चीज़ें थी, लेकिन जिस तरह आजकल कई जगहों पर मुक़द्दस बाक़ियात कहकर कई चीज़ें हैं, जिनका कोई ऐतिहासिक (तारीख़ी) सुबूत पूरी तरह से साबित नहीं होता, इसी तरह ख़ुद बनायी गयी चीज़ों से भी कुछ हासिल नहीं हो सकता, जिस तरह से कुछ लोग नबी ﷺ के जूते के समान बनाकर अपने पास रखने को या घरों में लटकाने को या ख़ास तरीक़े से बनाकर तकलीफ़ दूर करने और दिली मुराद पूरी करने वाला समझते हैं, इसी तरह क़ब्रों पर वलियों के नामों के चढ़ावे को पाक चीज़ और वहाँ के सामान्य भोज को पाक चीज़ समझते हैं, जबकि यह अल्लाह के सिवाय दूसरों पर चढ़ावा हैं, जो शिर्क की परिधि में आता है, इसको खाना ख़ासकर हराम है, क़ब्रों को ग़ुस्ल कराया जाता है और उसका पानी पाक समझा जाता है, हालांकि क़ब्रों को ग़ुस्ल कराना ख़ानये कअबा के ग़ुस्ल की नक़ल है, जो किसी तरह से जायज़ नहीं है, यह गंदा पानी पाक कैसे हो सकता है, यह सभी बातें नाजायेज़ हैं, इनका धार्मिक नियमों में कोई असल नहीं है।

[1] यह नदी जार्डन और फ़िलस्तीन के बीच है। (इब्ने कसीर)

[2] इन ईमानवालों ने भी जब शुरू में दुश्मन की बहुत बड़ी तादाद देखी, तो अपनी कम तादाद को देखते हुए इस बात को वाज़ेह किया, जिस पर उन के आलिमों और उन से ज़्यादा ईमान रखने वालों ने कहा कि कामयाबी तादाद में ज़्यादती और हथियार के आधार पर नहीं मिलती, बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा पर आधारित (मबनी) है और अल्लाह तआला का समर्थन (ताईद) हासिल करने के लिए सब्र का होना ज़रूरी है।

The Ummah Technology Mission

२५०. और जब उनका जालूत और उसकी फ़ौजों से मुक़ाबला हुआ, तो उन्होंने दुआ की, हे हमारे पालनहार! हमें सब्र अता कर और साबित क़दम बना दे और काफ़िर क़ौम पर हमारी मदद कर।[1]

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿250﴾

२५१. अत: उन्हें अल्लाह के हुक्म से पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत का क़त्ल कर दिया[2] और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत[3] और जितना चाहा इल्म भी अता किया और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो धरती में फ़साद फैल जाता, लेकिन अल्लाह दुनिया के लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।[4]

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿251﴾

२५२. यह अल्लाह की आयतें (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशदूतों) में से हैं।[5]

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿252﴾

---

[1] जालूत उस दुश्मन कौम का सेनानायक था, जिस से तालूत और साथियों का मुक़ाबला था, यह अमालक़ा की क़ौम थी, जो अपने वक़्त में योद्धा और बहादुर लोग समझे जाते थे, उनकी इसी प्रसिद्धता (शुहरत) के वजह से ठीक जंग के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में सब्र और मजबूती के लिए और कुफ़्र के सामने ईमानवालों को फ़त्ह और कामयाबी की दुआ की, यानी भौतिक कारणों (माद्दी अस्बाब) के साथ-साथ ईमानवालों के लिए ज़रूरी है कि वह अल्लाह की ओर से कामयाबी और फ़त्ह के लिए ख़ास तरीक़े से दुआ करें, जिस तरह बद्र की जंग के वक़्त नबी ﷺ ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आग्रहता और विनम्रता (इन्कसारी-इसरार) से फ़त्ह और कामयाबी के लिए दुआ की थी, जिसे अल्लाह ने क़ुबूल किया जिसकी वजह से मुसलमानों की छोटी सी तादाद ने काफ़िरों की बहुत बड़ी तादाद पर फ़त्ह हासिल किया।

[2] हज़रत दाऊद जो अभी न पैग़म्बर थे और न बादशाह, इस तालूत की सेना में एक फ़ौजी थे, उन के हाथों जालूत मारा गया और इस थोड़े से ईमानवालों को बड़ी लड़ाकू क़ौम पर जीत दिलवाई।

[3] इस के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद को बादशाहत और नबूवत दोनों अता किया।

[4] इस में अल्लाह के एक क़ानून की चर्चा है कि वह इंसानों ही के एक उम्मत के ज़रिये दूसरी उम्मत के ज़ुल्म और ग़ल्बा को ख़त्म करता रहता है अगर वह ऐसा न करता और किसी एक ही उम्मत को सदा ताक़त और ग़ल्बा का सौभाग्य दिये रहता तो यह धरती ज़ुल्म और फ़साद से भर जाती।

[5] यह पिछले वाक़िआत जिनका इल्म आप पर नाज़िल पाक क़ुरआन के ज़रिये दुनिया को हो रहा है, हे मुहम्मद (ﷺ) बेशक आप की नबूअत और सच्चाई का सुबूत हैं, इनका बयान न किसी किताब में किया है न किसी से सुना है, जिस से वाज़ेह है कि यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो वह्यी (ईशवाणी) के ज़रिये अल्लाह आप पर उतार रहा है।

The Ummah Technology Mission